घर में रोजगार, प्रवासियों की घटी रफ्तार

जेएनएन, नई दिल्ली: काम-धंधे और रोजगार के लिए दूसरे राज्य जाने वाले कामगारों की संख्या में पिछले 12 वर्षों के दौरान रिकार्ड कमी आई है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) ने अपनी एक रिपोर्ट में राज्यों की समृद्धि की तस्वीर दिखाते हुए कहा है कि लोगों को अपने घर में रोजगार मिलने लगा, तो उनके बाहर जाने की रफ्तार में कमी आई है। 2011 में प्रवासी कामगारों की संख्या 45.57 करोड़ थी, 2023 में घटकर 40.20 करोड़ रह गई। इस तरह प्रवासी कामगारों की संख्या में 12 प्रतिशत की कमी देखी गई है।

ईएसी-पीएम के पूर्व चेयरमैन बिबेक देबराय द्वारा लिखे गए पेपर में कहा गया है-हमारा अनुमान है कि यह प्रवासन के प्रमुख क्षेत्रों में या उसके निकट शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और संपर्क जैसी बेहतर सेवाओं की उपलब्धता के साथ-साथ बेहतर आर्थिक अवसरों के कारण है। यह इस बात का संकेत है कि देश में आर्थिक अवसरों में वृद्धि हो रही है।

'40 करोड़ सपने! उच्च आवृत्ति डाटा का उपयोग करके भारत में घरेलू प्रवास की स्थिति और दिशाओं की जांच करना' शीर्षक से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में कुल मिलाकर घरेलू प्रवास धीमा हो रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रवास दर कुल जनसंख्या का 37.64 प्रतिशत थी। अनुमान है कि यह अब घटकर 28.88 प्रतिशत हो गई है। इस रिपोर्ट में कामगारों की प्रवृत्ति का आकलन करने के लिए तीन तरह के आंकड़ों का उपयोग किया गया है-यात्रियों की संख्या पर भारतीय रेलवे अनारक्षित टिकट प्रणाली डाटा, भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) से मोबाइल टेलीफोन उपभोक्ताओं का रोमिंग डाटा और जिला स्तरीय बैंकिंग डाटा। रिपोर्ट में कहा गया है कि दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु और कोलकाता जैसे महानगरों के आसपास स्थित जिलों से बड़ी संख्या में लोग काम-धंधे के लिए निकलते हैं।

प्रतीकात्मक चित्र (फाइल)

- **प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने दिखाई राज्यों की समृद्ध होती तस्वीर**
- **काम-धंधे के लिए दूसरे राज्यों में जाने वालों की संख्या में 12 प्रतिशत की कमी**

उत्तर प्रदेश : प्रवासी जाते भी, आते भी

- 2011 की जनगणना के अनुसार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, बिहार और बंगाल से सबसे ज्यादा कामगार रोजगार के लिए निकलते हैं। प्रवासी कामगारों में इन पांच राज्यों का हिस्सा 48 प्रतिशत है। इसमें राज्य के भीतर के प्रवासी भी शामिल हैं।
- काम-धंधे के लिए निकलने वाले कामगार सबसे ज्यादा महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, बंगाल और तमिलनाडु...इन पांच राज्यों का रुख करते हैं। आने वाले कामगारों में इन राज्यों का हिस्सा 48 प्रतिशत है। इसमें राज्य के भीतर के प्रवासी भी शामिल हैं।
- असम को छोड़कर पूर्वोत्तर के ज्यादातर राज्यों से लोग कामकाज के लिए बाहर निकलते हैं। इनमें से ज्यादातर लोग अपने पड़ोसी राज्यों में जाते हैं।
- ज्यादातर प्रवासियों में अपने गृह राज्य के निकटवर्ती राज्यों में जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इनमें विवाह के कारण होने वाला स्थान परिवर्तन भी शामिल है।
- दिल्ली को छोड़ अन्य केंद्रशासित प्रदेशों से भी लोग कामकाज के लिए बाहर निकलते हैं। पर्वतीय राज्यों के कामगारों में भी बाहर जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है।